आपातकाल में सृजन फुलवारी

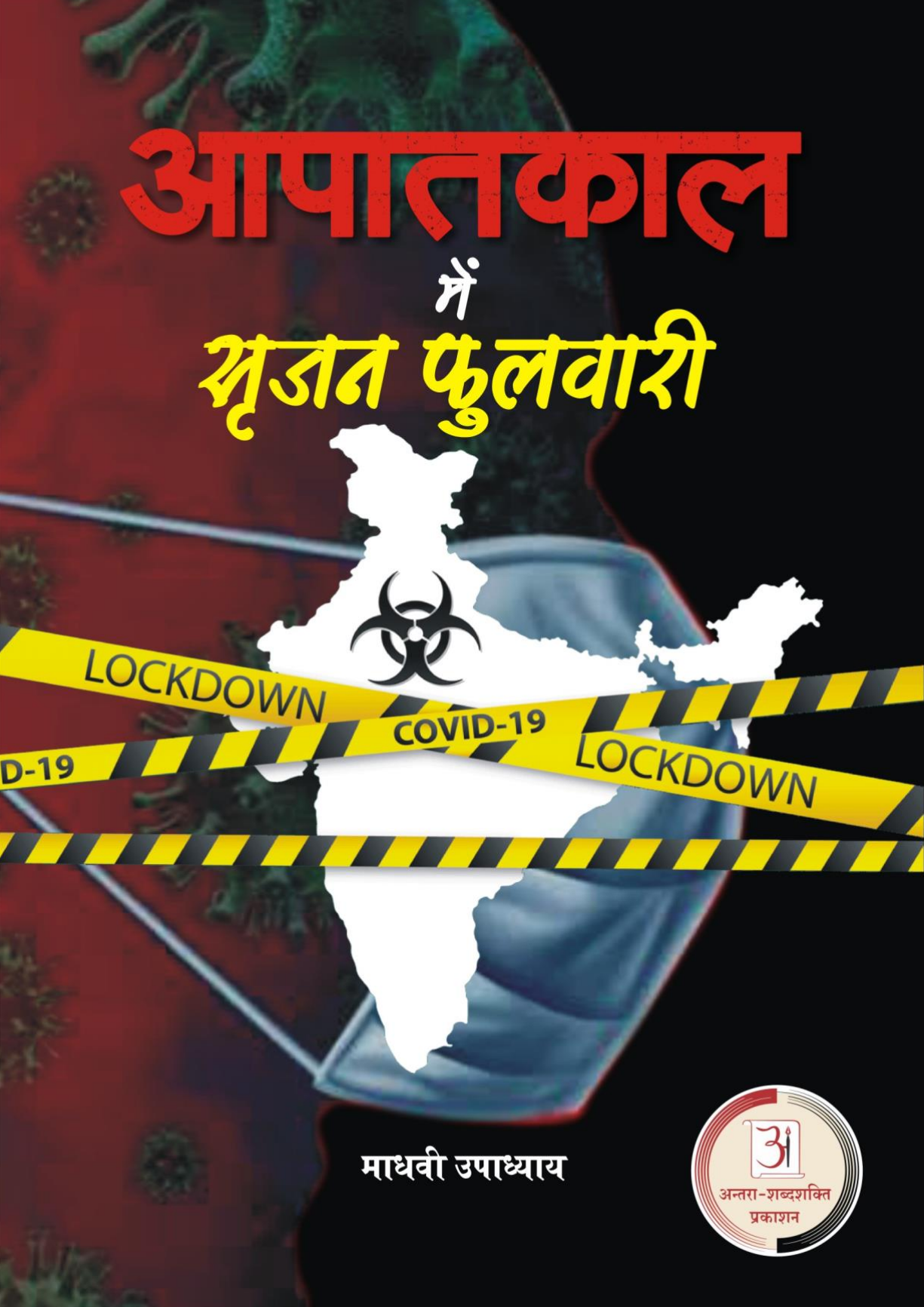

माधवी उपाध्याय

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

माधवी उपाध्याय

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-169-5

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेंल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020 माधवी उपाध्याय

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY MADHVI UPADHYAY

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेंरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेंशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की

आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	वागेश्वरी	6
2.	कोरोना का कहर	7
3.	भारत माता	8
4.	हम सब एक हैं	9
5.	मतवाला फाल्गुन	10
6.	हम खोजे कूल-किनारों में	11
7.	भाव की गहराई	12
8.	हे! जगजननी	13
9.	शरद ऋतु	14
10.	राष्ट्र की पहचान हिन्दी	15
11.	देश की शान तिरंगा	16
12.	रिमझिम सावन	17
13.	नारी से सृष्टि पूरी है	18
14.	इन्सान से इन्सान अब	19
15.	परिवेश बदलता देख देख	20
16.	संकल्प दीप	21

वागेश्वरी

वागेश्वरी! माँ सरस्वती!
हम करते तेरी आरती!
नित चरणों में शीश नवाते
तू ज्ञान से हमें संवारती।

अज्ञानता तू मन की हर ले।
सुवासित जीवन का वर दे।
हे ज्ञानदायिनी! हँसवाहिनी!
अन्तरतम ज्योतिर्मय कर दे। वागेश्वरी.....!

गीतों में विणा की ध्वनि-सी
मधुरिम झंकारों सा स्वर दे।
कलम चले यूं सदा हमारी,
छंदों में ऐसा रस भर दे। वागेश्वरी.....!

तेरा ध्यान जो मन से धरते,
विद्य-धन वे अर्जित करते।
हे दयामयी! हे कल्याणी !
भाव-पुष्प हम अर्पित करते। वागेश्वरी....!

हे श्वेताम्बरी! विणा वादिनी!
सबके जीवन में रस भर दे।
जग का अंधकार मिट जाए।
ज्ञान चक्षु उर्जस्वित कर दे। वागेश्वरी.....!

कोरोना का कहर

महामारी लेकर आया ये कोरोना
किया घुसपैठ देश का हर कोना।।

चीन से निकला ये कैसा विकास
दुनियाँ का हो रहा है सर्वनाश।।

दुनियाँ है त्रस्त, ऐसे वायरस से
कैसे हों मुक्त हम ऐसे राक्षस से।।

साफ-सफाई का ध्यान रखें हम
दूरियाँ बना कर मास्क पहने हम।।

बढ़ने का इसे अवसर नहीं देंगे
मिलकर हम वायरस से लड़ेंगे।।

जीवन है सबका अति अनमोल
संयम, सतर्कता है इसका तोड़।।

आस का दीप जलाए रखना है
अटल विश्वास बनाए रखना है।।

धैर्य से रहना है, पुराने दिन आएंगे
सब मिल बैठेंगे,औ दिन खिल जाएंगे।।

वायरस ने हमें जीना सिखाया है
चहुँओर वातावरण शुद्ध कराया है।

भीड़ घट गई है, शोर कम हुआ है
हरियाली पसरी, जोर कम हुआ है।

ईश्वर में आस्था, जीने का है रास्ता
जीत होगी अपनी,मन में है आस्था।

भारत माता

भारत माता कहे पुकार!
जीने का सबको अधिकार।
आरक्षण की ना हो दीवार।
करे सभी इसका प्रतिकार।

जाति-धर्म का ना हो भेद,
मिले सबको समान अधिकार।
राग- द्वेष मन के मिट जाए।
मिलकर रहें सभी खुशहाल।

उन्मुक्तता का ना हो हनन,
सुंदर अभिव्यक्ति से हो मनन!
भूख से ना हो कोई बेहाल।
निर्धनता ना करे लाचार।

भारत रहे सदा गुलजार।
हम मिल करें इसका प्रचार।
आज़ादी का मतलब समझें,
मानव हित से हम करें प्यार।

नारी की पूर्ण सुरक्षा हो।
बच्चों में उपजे संस्कार!
भारत माता कहे पुकार!
जीने का सबको अधिकार।
जय हिंद! जय भारत!

हम सब एक हैं

एक छांव,एक धुप में रहते।
एक माँ का हम वंदन करते।।
हम सभी सनातन धर्मी हैं।
एक माँ के आँचल में पलते।।

अलग हैं सबके रंग-स्वरुप,
भाषा, संस्कृति के विविध रूप।।
युगों-युगों की निर्मलता से,
प्रवाहमान है पुण्य अनूप।।

भांति-भांति कर्मों से शोभित
रंग- बिरंगी फुलवारी हम।
सब रहें परस्पर प्रेमपूर्ण
क्यों विष!समाज में घोले हम!

धर्म के नाम पे द्वेष बढ़ाकर
कटुता, इर्ष्या क्यों फैलाये!
हाथ थाम हम एक दूजे का
नव सृजन के बीज लगायें।।

है पुरातन संस्कृति हमारी,
सदा सिखाती मानवता।।
फिर से हम समृद्ध करें,
अपनी धरा की पावनता।।

एक छांव, एक धूप में पलते।
एक माँ का हम वंदन करते।।
हम सब ही सनातन धर्मी हैं।
एक माँ के आँचल में पलते।।

मतवाला फागुन

मतवाला फागुन आया है, पवन मुदित मुस्काया है।।
मधुपों की गुंजार गलिन में, पुलक बसंती रंग छाया है।।

तरु पर आम्र मंजरी सुरभित,
चहुँ दिशि फैली मादकता है।
खिली कलियों की तरुणाई, यूँ पुलक हृदय भरमाया है।
मतवाला फागुन आया है, पवन मुदित मुस्काया है।।

खेतों में सरसों इठलाये,
झूम रही हर्षित, उन्मादित!
कलियों पर भँवरा मंडराए, पुष्प सुगंधित मन भाया है।
मतवाला फागुन आया है, पवन मुदित मुस्काया है।।

फाग के रंग में छाई खुमारी,
मद भरी अँखियों की प्याली।
कोयल भी मृदु तान सुनाए, प्रकृति रूप निखर आया है।
मतवाला फागुन आया है, पवन मुदित मुस्काया है।।

होली में सब भेद मिटा हम,
एक दूजे को रंग लगायें।
प्रेम भाव रहे जन-जन में, यह सोच हृदय हर्षाया है।
मतवाला फागुन आया है, पवन मुदित मुस्काया है।।

हम खोजे कूल-किनारों में

इस जीवन की निर्झरता में, है चैन नहीं अविरलता में।
सब ढूंढ़ रहे हैं सुख-शांति, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में।।
हम खोजे कूल-किनारों में,...!

सब तार-तार है मानवता! क्षत-विक्षत पड़ी चौराहों पे।
इज्जत मासुमों की लुटती, है दंभ बढ़ा व्यवहारों में।।
हम खोजे कूल-किनारों में,....!

सब फन फैलाये,यहाँ-वहां, विषधर हैं सभ्य समाजों में।
हर मानुष कुंठाग्रस्त यहाँ, ना रौनक अब त्यौहारों में।।
हम खोजे कूल-किनारों में,....!

अंदर से हैं खोखले सभी, व्रण की टीसती पिडाओँ से।
है मुस्काने झूठी सबकी, शतरंजी हास्य फुहारों में।।
हम खोजे कूल-किनारों में,...!

यहाँ बसी है दर्द की बस्ती, जा पूछो उन लाचारों से।
जो आभावों में जिकर भी, हँसते रहते हैं यारों मे।।
हम खोजे कूल-किनारों में,...!

देख सामाजिक अवमूल्यन, घुलता है अंतर अंदर-अंदर।
लुप्त हो रही है मानवता, मानव के अत्याचारों में।।
हम खोजे कूल-किनारों में,...!

भाव की गहराई

भाव की गहराई को अब समझता कौन है!
जबतक आवाज ना दो,याद करता कौन है
भाव की गहराई को अब समझता कौन है।

प्यार और अपनापन सब छलावा हो गया है,
रिश्ता भी अब मृगतृष्णा-सा दिखावा हो गया है
जहाँ बोलना है जरूरी समाज वहाँ भी मौन है
भाव की गहराई अब .....

लोभ है,तृष्णा है, छटपटाहट है मन में
अपने ही हिसाब से चलना है चलन में
अब वेदना की स्याह को भांपता कौन है !
भाव की गहराई को अब.....

मतलब के लिए आदमी हो जाता अब खास है।
दोस्ती में विश्वास का खो गया अब आस है।
स्वार्थ पूर्ण होते ही अब पूछता कौन है!
भाव की गहराई को अब.....

सुलगता है अंतर, ये अंदर ही अंदर
स्वांस में भी दर्द का छिपा हुआ है समंदर
चाहत की वेग को अब मापता कौन है!
भाव की गहराई को अब .....

जबतक आवाज ना दो, याद करता कौन है।
भाव की गहराई को अब समझता कौन है।

हे! जगजननी

हे! जगजननी, जय जगधात्री
जय माँ! अंबे भवानी माँ!
हे शक्तिस्वरूपा,भक्त वत्सला
हे जग की कल्याणी माँ!

शीश नवाए चरणों में तेरी,
तेरी महिमा के गुण गाएँ।
भक्ति भाव से पूजे तुझको,
आशिष का हम अमृत पायें।।

हे दुःख हरिणी, हर सुख करिणी,
जय माँ! अंबे भवानी माँ!
हे शक्तिस्वरूपा,भक्त वत्सला,
हे जग की कल्याणी माँ!

भाव के भोग लगाएं तुझको,
चरण पखारे बारम्बार।।
मन से करे जो भक्ति तुम्हारी,
बरसे उनपर कृपा अपार।।

हे सिंह वाहिनी,रिपु संघारिनि
जय माँ! अंबे भवानी माँ!
हे शक्ति स्वरूपा,भक्तवत्सला
हे जग की कल्याणी माँ!!

शरद ऋतु

है शरद ऋतु का आगमन,
फूलों की छटा है मनभावन।
नर्म धूप सबके मन भाये,
जैसे हो कोई अपनापन।

जब उषा की स्वर्णिम किरणें,
बिखरी नर्म -नर्म पत्तों पर।
ओस बूंद निखरीं ऐसी कि,
कलियां मुस्काई खिलकर। है शरद ऋतु का,....!

बहे मंद-मंद शीतल बयार,
पुलकित हो जाता हरसिंगार।
बिछ गई धरा पर तरुणाई,
अपलक सुंदरता रही निहार। है शरद ऋतु का .....!

ठिठुरे सबके अंग-अंग!
हलचल मचाए,मन के तरंग।
धुंधली बर्फीली चादर में,
ओढ़ लिए जीवन के उमंग। है शरद ऋतु का .....!

शीतल, शांत, मनोहर, धवला
मदमाती है शरद चांदनी!
रात, घनेरी सन्नाटों में,
विहंस रही निशा उन्मादिनी। है शरद ऋतु का .....!

किन्तु, शीत ऋतु का मौसम,
निर्धन-जन को है दुःखदायी।
कोशिश मिलकर करना होगा,
सबका जीवन हो सुखदायी। है शरद ऋतु का.....!

राष्ट्र की पहचान हिन्दी

हिन्दी गरिमामय भाषा है।
प्रतिपल इसमे जिज्ञासा है।।
राष्ट्र की पहचान है हिन्दी
जन जन को इससे आशा है॥

सुलभ, सुघड़, मृदुभाषी हिन्दी।
मधुर -मधुर भावो से भरकर,
हम सब को जोड़े है हिन्दी।
नित विकास की अभिलाषा है।।

तुलसी, सूर, रहीम, मीरा से,
बहती काव्य की रसधारा है।
महादेवी, निराला, दिनकर,से
हिन्दी की अनुपम परिभाषा है।।

हिंदी भाषा में निहित सदा है।
अपनी संसकृति और धरोहर।।
हिन्दी को सतत् प्रवाहित कर,
विश्व-पटल पर लाने की प्रत्याशा है।।

संस्कार हमारा अपनी हिन्दी।
व्यवहार हमारा अपनी हिन्दी।।
अक्षुण्ण रहे पहचान हमारी।
हिन्दी देती यही दिलासा है॥
हिन्दी गरिमामय.....!

देश की शान तिरंगा

लहराये उतुंग शिखर पर
देश की शान, तिरंगा हमारा।।
विश्व पटल पर विजयी है ये
दे शांति का संदेशा प्यारा।।

हम स्वतंत्रता के रंग में डूबे
कश्मीर से कन्या कुमारी।।
धर्म है सबकी मानवता
एक राष्ट्र, एक नीति हमारी।।

देशभक्ति है सबसे बढ़कर
प्रेम से रहते हमसब मिलकर।।
बलिदान हुए जो देश के लिये
नमन है उन वीरों को अँजुरी भर।।

प्रगतिशील है देश हमारा
शिक्षा,विज्ञान में चमकता सितारा।।
जय -जय हो भारत माता की
नित-नूतन हो सुखद उजियारा।।
लहराये उतुंग शिखर पर
देश की शान तिरंगा प्यारा।।

रिमझिम सावन

रिमझिम सावन जो बरसा है,
मन सरसिज-सा हरसा है।
उस कारी घटा को देख-देख,
ये मनवा कितना तरसा है।

भीगा अंबर,भीगा अंतर,
भीगे धरती का पोर-पोर।
मस्त मगन हो मोरनी नाचे,
झूमे तरुवर का छोर-छोर। रिमझिम सावन जो,.....

चहुंओर बहा मदमस्त पवन,
है हरियाली गीतों का जोर।
धरती का आँचल तृप्त हुआ,
हरितिमा पसरी चहुंओर। रिमझिम सावन जो,.....

तपते तन को मृदु शीत मिले,
शीतल बयार करता सूभोर।
मृदु भावों को झंकृत करके,
पुलकित मन करता शोर-शोर। रिमझिम सावन जो,.....

अवनी-अंबर का मिलन हुआ,
मिट्टी की खुशबू फैली हर ओर।
खेतों में फसलें लहराई, कृषक हुए हर्षित विभोर।
रिमझिम सावन जो बरसा है मन सरसिज सा हर्षा है।।

नारी से सृष्टि पूरी है

नारी बिन सृष्टि अधूरी है, नारी जीवन की धूरी है।

नारी स्नेह दया की मूरत, बुद्धि औ प्रतिभा की सूरत।
नारी शीतल-शांत, मनोरम, भाव सदा रखती है अनुपम।
नारी से चाहत पूरी है।

माता, बहन, बेटी, पत्नी बन, हर रूप में है साथ निभाती।
अपनों की मान-प्रतिष्ठा हेतु, कितनी बार गरल पी जाती।
नारी से जीवन सिंदूरी है।

नारी अनबुझी पहेली-सी, मुखरित है,कोई सहेली-सी।
मापना कठिन उसका मन है, समंदर-सा गहरापन है।
नारी जीवन की कस्तूरी है।

नारी विश्वास से भरी हुई, ह्रदय की भाषा लगती है।
ऊर में छिपा सारे गम सहती, परिवार में खुशियाँ हैं भरती।
नारी से प्रेम अंगूरी है।

नारी को कमजोर ना समझो, अपने पग की धूल ना समझो।
नारी में अपिरिमीत शक्ति है, मरु भी निर्झर कर सकती है।
नारी से जीवन माधूरी है।

नारी बिन सृष्टि अधूरी है, नारी जीवन की धूरी है।

इन्सान से इन्सान अब

भावना है मर गई, संवेदना झुलस गईं।
व्यक्ति स्वार्थी हो गए, सब अर्थ व्यर्थ हो गए।
प्रेम औ सौहार्द के विश्वास आज खो गए।
इन्सान से इन्सान अब.....

पाप पुण्य बन गए, पुण्य पाप हो गए।
ऐसी बयार बह चली, सब अनर्थ हो गए।
हरेक व्यक्ति में है आज, विषय-ताप भर गए।
इन्सान से इन्सान अब.....

सहृदय ना रहा कोई, द्वेष दिल में भर गए।
औरों को गिराकर यूँ, परिहास वे कर गए।
कुंठित प्रतिशोध के, आग दिल में भर गए।
इन्सान से इन्सान.....

प्यार ढोंग रह गया, दिखावे में सिमट गया।
हर रिश्ते-नातों में, भावना छला गया।
अब इन्सान में इंसानियत के तलाश शेष रह गए।
इन्सान से इन्सान अब....!

परिवेश बदलता देख देख

परिवेश बदलता देख-देख, मन हर पल घबराता है..।।

खुद में मगन हैं दुनियाँ वाले, रिश्ते नाते हो गये झूठे।
फर्ज निभाने को ही सारे, हाल एक दूजे का पूछें।
निर्बल औ असहाय पर ना, ध्यान किसी का जाता है।
परिवेश बदलता देख देख,....।

खुद जब संकट से घिर जाएं, सारे रिश्ते याद आ जाएं।
छोटे हों या बडे सभी का, साथ सभी यूं पाना चाहें।
दंभ के ऊपर स्वार्थ का शासन, तब हावी हों जाता है।
परिवेश बदलता देख देख,....।

यूँ तो मीत कईं हैं सबके, अपनापन छलकाने वाले।
पर एक नजर ना आते कभी, दुःख में दर्द बाँटने वाले।
विपदा कोई आन पड़ी तो, भ्रम क्षण में छँट जाता है।
परिवेश बदलता देख देख,....।

हे भगवन! हे जगत के स्वामी, सभी सुखी हों ऐसा तू कर दे
तिमिर स्वार्थ का मिट जाएं, दयाभाव का लघु दीप जला दें
सुखी भविष्य क़ी अभिलाषा में, मनवा अब मुस्काता है,....।
परिवेश बदलता देख-देख, मन अपना हर्षाता है॥

संकल्प दीप

संकल्प दीपों से,
रोशनी है झिलमिलाती,
दिशायें सब जगमगाती
आह्लादित मन से,
हमें प्रेरित कर जाती।
क्षणिक ही सही।

दिप्त हुआ सघन- तम,
मुखरित हुई, भावना ऊतम।
पावन प्रतीकों से,
प्रकशित हुआ अन्तर्तम।
क्षणिक ही सही!

सुखद क्षण,पुलकित सवेरा,
मिट गया संत्रास,मन का अंधेरा।
गगन है रोमांचित,
धरा भी है सुसज्जित।
क्षणिक ही सही!

हरे खेतों के फलक पर,
भवँरा गुनगुनाते, अधर पलक पर।
करें हम संकल्प मिलकर,
सबकी कटुता मिट जाए छंटकर।
क्षणिक ही सही!
संकल्प दीपों से,.!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

अंतरा शब्दशक्ति समूह एक ऐसा मंच है, जो सभी रचनाकारों को सदैव साथ लेकर चलता है। अनवरत सबकी रचनाओं को महत्व देता है, प्रोत्साहित करता, उनकी रचना प्रकाशित कर उनका मनोबल बढ़ाता है।

विगत एक महीना से संपूर्ण विश्व कोरोना जैसे घातक वायरस के संक्रमण से जूझ रहा है। हम और हमारा देश विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। देश में एक महीना से लॉकडाउन के कारण हम समाज व रिस्तेदारों से बिल्कुल दूर हो गए हैं। घर में रह कर सबका मन ऊब सा गया है।

ऐसी विकट स्थिति में भी अंतरा शब्दशक्ति द्वारा लेखन के प्रति जागरूकता पैदा करना, सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करना अत्यंत प्रसंशनीय कार्य है। इस निराशा जन्य परिस्थिति में कविता, कहानी के माध्यम से अपनी भावनाएं उद्घृत करना, देश और समाज मे घटित घटनाओं को लोगो के समक्ष संप्रेषित करना हमें निराशा से दूर रखती है तथा हमारी सोच एवं लेखनी को नई ऊर्जा प्रदान करती है। यह संभव हो पाया है, प्रतिष्ठित समूह अंतरा शब्दशक्ति के द्वारा।

इस समूह की प्रखर व्यक्तित्व की धनी सम्पादिका डॉक्टर प्रीती समकित सुराना जी द्वारा निराशा में आशा का संचार एवं रचनात्मक मकता को प्रोत्साहित करना अत्यंत श्लाध्य है। इनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है।

रचनाकार

माधवी उपाध्याय

जी/७१२ए आर्किड रेसिडेंसी,
७वी एक्सटेंसन रोड़, सोनारी
जमशेदपुर, झारखण्ड

Email- shreyaupadhyay112003@gmail.com
Mobile - 7903001659

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-169-5

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/